दुधारू पशुओं में बाह्य परजीवी नियंत्रण

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र
संयुक्त निदेशालय प्रसार शिक्षा
भाकृअप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर - 243122 (उ. प्र.)

- ❖ बाह्य परजीवी (किलनी, माइट्स, जुएँ, मक्खियाँ तथा पिस्सू) पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादन क्षमता पर विपरीत असर डालते हैं।
- ❖ उष्ण कटिबन्धीय देशों में वहाँ की जलवायु की वजह से बाह्य परजीवीयों की बहुलता होती है।
- ❖ बाह्य परजीवी संक्रमण की वजह से पशुपालकों को अधिक आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है क्योंकि ये पशुओं की उत्पादन क्षमता (दूध, माँस, ऊन) को प्रभावित करने के साथ–साथ कई तरह की बीमारियाँ भी फैलाते हैं तथा इनके नियंत्रण हेतु दवाओं पर धन खर्च भी अधिक हो जाता है।

बाह्य परजीवीयों के हानिकारक प्रभाव :

- ❖ पशुओं में त्वचा की खुजली तथा जीवाणु संक्रमण के कारण घाव बन जाते है।
- ❖ किलनियों के अधिक संक्रमण के कारण नवजात पशुओं में रक्ताल्पता, बेचैनी तथा शरीर भार में कमी देखी जाती है।

- ❖ कुछ किलनियाँ विशैला पदार्थ भी स्रावित करती है, जिससे पशुओं में पक्षाघात तथा ध्यान न देने पर प्रभावित पशु की मौत भी हो सकती है।
- ❖ बाह्यय परजीवी, पशुओं में विशाणु, जीवाणु तथा परजीवी जनित बीमारियों का संचरण करती हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख का उल्लेख सारिणी–1 में किया गया है।

पशुओं में बाह्यय परजीवी नियंत्रण :

- ❖ बाह्यय परजीवी नियंत्रण हेतु सबसे सर्वमान्य विधि पशु के शरीर पर सीधे–सीधे परजीवीनाशी दवाओं का प्रयोग ही है।
- ❖ हाँलाकि कोई भी विधि लम्बे समय तक पशुओं को बाह्यय परजीवी मुक्त रखने में असफल साबित होती है, अतः अन्य विधियों का भी समय–समय पर प्रयोग करते रहना चाहिये।
- ❖ पशुओं के शरीर पर बाह्यय परजीवियों के संख्या बल तथा महत्व को देखते हुए विशिश्ट परजीवी नाशी कार्ययोजना बनाकर उपचार किया जाना चाहिये।
- ❖ पशु के एक ही स्थान पर बाँधकर रखे जाने की अवस्था में, परजीवीनाशी दवाओं का पशुगृह अथवा बाड़े में भी प्रयोग सुनिश्चित करना चाहिये, क्योंकि परजीवियों के जीवनचक्र की कुछ अवस्थायें किसी भी समय जमीन पर भी मौजूद होती है।
- ❖ पशुगृह अथवा बाड़े में प्रभावी किलनी नियंत्रण के लिये समय–समय पर टूट–फूट आदि की मरम्मत अवश्य कराना चाहिये।

सारिणी–1 : दुधारू पशुओं में बाह्यय परजीवीयों द्वारा फैलाई जाने वाली प्रमुख बीमारियाँ

कम सं0	बीमारी का नाम	फैलाने वाले बाह्यय परजीवी का नाम
1.	बबेसियोसिस (लहू मूतिया)	बूफिलस (किलनी)
2.	थाईलेरियोसिस	हायलोमा (किलनी)
3.	ट्रपेनोसोमोसिस (सर्रा)	टेबेनस व स्टोमोक्सिस (मक्खियाँ)
4.	अरलियियोसिस	रिफिसीफेलस तथा इक्सादिस (किलनी)
5.	एनाप्लाज्मोसिस	टेबनस व स्टोमोक्सिस (मख्खियाँ) तथा बूफिलस (किलनी)
6.	पिंक आई (मोरेक्सेला वोविस)	मस्का व रटोमोक्सिस समूह की मक्खियाँ
7.	हम्पसोर, इअरसोर तथा पैरों में घाव	मस्का व रटोमोक्सिस समूह की मक्खियाँ
8.	स्मर ब्लीडिंग (पैराफाईलेरिया वोवीकोला)	मस्का व रटोमोक्सिस समूह की मक्खियाँ
9.	एन्थ्रेक्स	मस्का व स्टोमोक्सिस समूह की मक्खियाँ

सारिणी – 2 : दुधारू पशुओं में प्रयोग होने वाली बाह्यय परजीवी नाशी दवाओं का विवरण

दवा वर्ग	नाम	क्रियाशीलता	टिप्पणी, यदि कोई हो
आरगेनोफास्फेट	**कोमाफास** असन्टाल पावडर (50% w/w) किलनी हेतु 1–1.4 ग्रा0/ली0 पानी में माइट्स हेतु : 2–3 ग्रा0/ली0 पानी में जुँए हेतु : 0.5 ग्रा0/ली0 पानी में घोल बनाकर शरीर पर लगायें। साथ–साथ	मक्खियाँ, जुंए, किलनी, माइट्स तथा त्वचा के अन्दर मक्खियाँ के लारवा	दूध, तथा माँस में अवशेष नहीं जाता है।
	डायाजीनोन (20% w/v) छिड़काव : 60 मिली0/20 ली0 पानी में स्नान : 3 ली0/1000 ली0 पानी में	मक्ख्याँ, जुंए, किलनियाँ	
सिन्थेटिकपाइरेथ्राइड	**साइपरमेथ्रीन** (10 % घोल) छिड़काव : 1मि0/ली0 पानी में गिराने के लिये : 5 मि0/ली0 पानी पशुगृह में छिड़काव : 20 मि0/ली0 पानी में	मक्ख्याँ, किलनी	दूध, तथा माँस में अवशेष नहीं जाता है।
	डेल्टामेथ्रिन (12.5 % घोल) किलनी हेतु : 2–3 मि0/ली0 पानी में घोल माइट्स हेतु : 4–6 मि0/ली0 पानी में घोल जुँए हेतु : 1–1.5 मि0/ली0 पानी में घोल मक्ख्याँ :2–3 मि0/ली0 पानी में घोल	किलनी, माइट्स, जुंए, व मक्खियाँ	
	फेनवलरेट (20 % घोल) किलनी हेतु : 6 मिली0/ली0 पानी में घोल माइट्स हेतु : 4 मिली0/ली0 पानी में घोल जुँए/ मख्खियाँ : 2 मिली0/ली0 पानी में घोल	किलनी, मख्खियाँ व जुंए	
	फ्लूमेथ्रिन (6 % घोल) स्नान व शरीर पर छिड़काव : दवा/500ली0 पानी में घोल 1ली0 शरीर पर सीधा प्रयोग (पोर आन) 1मिग्रा0/10 किलो शरीर भार रीढ की हड्डी के साथ–साथ (कन्धे से पूँछ तक)	किलनी, मक्खियाँ व जुंए	

	फ्लूमेथ्रिन (6 % घोल) स्नान व शरीर पर छिड़काव : दवा/500ली0 पानी में घोल 1ली0 शरीर पर सीधा प्रयोग (पोर आन) 1मिग्रा0/10 किलो शरीर भार रीढ की हड्डी के साथ–साथ (कन्धे से पूँछ तक)	किलनी, मक्खियाँ व जुंए	
मेकरोसाइक्लिक लेक्टोन्स	**आइवरमेक्टिन** सुई विधि : 0.2 मिग्रा/किलो शरीर भार (पोर आन) : 0.5 मिग्रा/किलो शरीर भार शरीर पर सीधा प्रयोग	मक्खियाँ व उनके लारवा, किलनी पिस्सू, जुँए	सुई विधि से दवा का माँस में अवशेष 120 दिनों तक, दूध में अवशेष 35–40 दिनों तक
	डोरामेक्टिन (प्रयोग व विधि आइवरमेक्टिन की भाँति)	आइवरमेक्टिन की तरह	मुख विधि से देने पर दवा का अवशेष माँस में 10–15 दिन व दूध में अवशेष 9 दिनों तक
	मोक्सीडेक्टिन (आइवरमेक्टिन की भाँति)	आइवरमेक्टिन की तरह	शरीर पर डालने वाली दवा का दूध में अवशेष नहीं आता है।
फोरमामाइड्स	एमिट्राज (12.5 % घोल) 2 मिली दवा/ली0 पानी में	किलनी, माइट्स व जुंए	
सेलीसाइलानिलिड्स	क्लोजान्टल मुख विधि से दवा की खुराक 7.5–10 मिग्रा/किलो शरीर भार	खून चूसने वाले बाह्य परजीवी तथा मक्खियों की पशु के शरीर में लारवा अवस्था	❖ माँस में दवा का अवशेष 28 दिनों तक रहता है। ❖ दुधारू पशु में दवा वर्जित है।

संरक्षण : **डा0 राज कुमार सिंह**
निदेशक, भ0कृ0अ0प0–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसांधन संस्थान, इज्जतनगर– 243122(उ0प्र0)

मार्गदर्शन: **डा0 महेश चन्द्र**
संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ0 प्र0)

लेखक : **डा0 हीरा राम**
वैज्ञानिक

डा0 रजत गर्ग
प्रधान वैज्ञानिक, परजीवी विज्ञान विभाग

डा0 पार्थ सारथीबैनर्जी
प्रधान वैज्ञानिक, प्रभारी, पूर्वी क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता, भातीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान

संपादन : **डा0 रूपसी तिवारी**
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसधांन संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ0 प्र0)

अधिक जानकारी हेतु संपर्क :
आई0वी0आर0आई0 हेल्पलाइन, 0581–2311111
किसान कॉलसेन्टरः 1800–180–1551
आई0 वी0 आर0 आई0 बेवसाइट : www.ivri.nic.in